* लोक गीत *

मेरैया सेरैया जो लाइदे मामा मोर
=> मैं तो चलेया सौरेआ दे देशा जो
मामी मेरी ने सगन सजाया
मामे मेरे ने बाराती जाणा
मेरी मामीया ने पाईओ घनघोर
हौले-२ चल मामा जी
मेरीया बदीया लाइदे बैहना मोर
=> मैं तो चलेया सौरे देशा जी
बैहना मेरी ने सगन सजाया
जीजे मेरे ने बराती जाणा
मेरी बैहना ने पईयो घनघोर
हौले-२ चलो जीजा जी
मेरैया मोतिया जो लाइदे चाची मोर
=> मैं तो चलेया सौरे देशा जो।
चाची मेरी ने सगन सजाया
मामे मेरे ने बराती जाणा
मेरी चाचीया ने पाईओं घनघोर
हौले-२ चल चाचा जी
मेरीया घोड़िया जो लाइदे पिता जी मोर
=> मैं तो चलेया सौरे देशा जो
माता मेरी ने सगन सजाया
पिता मेरे ने बाराती जाणा
मेरैया दोस्तां ने पाईयो घनघोर
हौले-२ चल पिता जी

नाम => उर्मिला देवी
कक्षा => बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल न. => 00 403

Scanned with CamScanner

बधावा

पहला बधावा गोहरे जो आया,
गोहरे दी रखया सजाई ओ।
आदियाँ सखियाँ ने बधावा जे गाया,
कृष्ण ने मुरली बजाई ओ॥

दूजा बधावा आँगने जो आया,
आँगने जो रखया लिपाई ओ।
आदियाँ सखियाँ ने बधावा जे गाया,
कृष्ण ने मुरली बजाई ओ॥

तीजा बधावा अंदरे जो आया,
अंदरे जो रखया सजाई ओ।
आदियाँ सखियाँ ने बधावा जे गाया,
कृष्ण ने मुरली बजाई ओ॥

चौथा बधावा चौंके जो आया
चौंके जो रखया सजाई ओ।
आदियाँ सखियाँ ने बधावा जे गाया,
कृष्ण ने मुरली बजाई ओ॥

Name- Suhani Devi
Roll No- 602
class - BA 2nd year

Scanned with CamScanner

(लोहला)

लोकगाथा (लोकगीत)

बसोये रा धियाड़ा बापुआ .... काली - काली रात बापुआ
.... २.

① पिगले री धारा ते तीन जणे उतरे २
आई गए लोहला जो रखारे बापुआ .....
बसोये रा धियाड़ा बापुआ ... काली-कालीरात बापुआ
.... २.

② न्हाई धोई लोहला खूब -- सजाई २
मेंहन्दी लगाई के सुहागन बनाई ....
बांका सजाया ढाक बापुआ ....
बसोये रा धियाड़ा बापुआ --- काली-काली रात बापुआ
.... २.

③ इक पासे लोहला री बारात जे आई २
दूजे पासे लोहला री लाश जे निकली ....
टूटी गया उमरा रा साथ बापुआ ....
बसोये रा धियाड़ा बापुआ --- काली-काली रात बापुआ
.... २.

④ डुंगो-२ पाणीआं च लाश डुबोई २
सासुएं दी लोहला परदेशन जे होई
हुंदा मत मेरेया उदास बापुआ
बसोये रा धियाड़ा बापुआ - काली- कालीरात बापुआ ....
२

चरकटी नृत्य इतिहास

चरकटी नृत्य हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिला की तहसील सरकाघाट तथा धर्मपुर का प्राचीन नृत्य है। यह नृत्य धान एवं मक्की की पहली फसल के दौरान सौज के महिने से पंज भिखमी पुण्या तक होता है। इसके उपरान्त 15 दिन के बाद यह नृत्य दीपावली तक चलता है। इस नृत्य की शुरुआत आज से लगभग सौ वर्ष पहले चरकटी एवं डंडु नामक पति पत्नि द्वारा चलाया गया था। माना जाता है कि चरकटी एवं डंडु के पास आय का साधन न होने के कारण राजा ने उन्हें इस नृत्य को करने का आदेश दिया था। जिसके कारण इस नृत्य के द्वारा जो अनाज तथा धन उन्हें प्राप्त होता था उस से वह अपना घर चलाते थे।

Scanned with CamScanner

(चरकती नृत्य) लोकगीत

1) देहल्ली वे सदेहल्ली सतबन्ते गौरि सदा लिखे सुहागण स्वर्णीये हाये चरकती।
2) उखला वे स्तूखला कउसल्या देवा, सात स्वागणी आईयां, माँ तेरिया सेवा चरकती।
3) चरकती भी ना बोलना, बस्मे दी बेटी महादेव की चेल्डी पंज भीखमी पुण्या चरकती।
4) इते धरा नी जाणा, इते खौड कुती, गवालु रे खादुया आपणा, जाई गल्हिया सूती चरकती।
5) इते गाँव नी जाणा इते काली बराली, धरा टोलाही गरथोणियाँ, बण टोली आई चरकती।
6) इते गाँव नी जाणा इते लगी रे मानू, हाल्ली मेरा चंद्रा इन्हे भाने जाहनु चरकती।
7) ऐ बैझा दा बूट सलखना इते लगी सलाहां, हाल्ली मेरा चंद्रा, इन्हे भानी बाहू चरकती।
8) ऐ बैझा दा बूटा सलखना इते लगी रे रमानू, हाल्ली मेरा चन्द्रा इन्हे भानी जाहनु चरकती।
9) मंझा दे किते टुकडे, पाई पतलीये पोली ब्याहूं मेरा चंद्रा मैं मना दी भोली चरकती।
10) फिझुआ वे खतीझुआ भाई रत्ता तेरा जोर न थोग्या आपणा चलेया कल्लु पराधे चरकती।
11) खेरा दा झुंड सुलखणा, जिथे लगी मधानी जाटिये दूध बरोल्लेया, कोई गम्भर गोला चरकती।

Scanned with CamScanner

सुहाग एवं घोडीया जो विवाह शादीयों में गाई जाती है।

(1.) घोडीये बदेरीये मेरे माप्यों दे घर जा
घोडी चुगदी हरे-हरे घा।

(2) किस दे घर शादी लगीयाँ किस दे मन
चाव घोडी चुगदी हरे-हरे घा।

बापु दे घर शादी लगीयाँ अमा दे मन
चाव घोडी चुगदी हरे-हरे घा।

घोडीये बदेरीये मेरे माप्यों दे घर जा
घोडी चुगदी हरे-हरे घा।

(3) किस दे घर शादी लगीयाँ किस दे मन
चाव घोडी चुगदी हरे-हरे घा।

चाचा दे घर शादी लगीयाँ चाची दे मन
चाव घोडी चुगदी हरे-हरे घा।

घोडीये बदेरीये मेरे माप्यों दे घर जा
घोडी चुगदी हरे-हरे घा।

Scanned with CamScanner

(4) किसदे घर शादी लगीयां किस दे मन
चाव घोडी चुगदी हरे हरे घा।

मामा दे घर शादी लगीयाँ मामी दे मन
चाव घोडी चुगदी हरे हरे घा।

घोडी थे बंद्हरीये मेरे माम्यों दे घर जा
घोडी चुगदी हरे हरे घा।

BY :-
SEEMA DEVI
B.A IIND YEAR
ROLL-NO- BA/18/HIST/00418

Scanned with CamScanner

कमलागढ़

जिला मंडी के तहसील धर्मपुर में स्थित कमलाहगढ़ रियासत का सबसे मजबूत अजय गढ़ है। यह किला मंडी से 101 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। किले की ऊंचाई लगभग 4500 फुट है तथा किले के ऊपरी भाग में कमलाहिया बाबा का मंदिर है।

मंडी रियासत के राजा हरी सेन जिनका शासनकाल 1605 ई० से शुरू हुआ, ने सुरक्षा की दृष्टि से कमलाह गढ़ किले का निर्माण कार्य शुरू करवाया। परंतु वह अपने जीवनकाल में यह कार्य पूरा न करवा सके। उनके बाद पुत्र सूर्यसेन ने 1625 ई० में अपने पिता के अधूरे काम को पूरा किया। राजा सूर्य सेन तथा ईश्वरी सेन के राज्यकाल तक कमलाहगढ़ में संपत्ति का भंडार रहा। राजा ईश्वरी सेन के शासन-काल के दौरान (1726-1788 ई०) कांगड़ा के राजा संसार चंद ने कमलाहगढ़ के ही सेनापति मुरली मनकू के साथ मिलकर किले को जीतने का षड़यंत्र रचा परंतु वह सफल न हो पाया। राजा ने मुरली व मंकी के सर कटवा दिए।

ईश्वर सेन के बाद जालिम सेन मंडी के राजा बने। बलबीर सेन जो राजा जालिम सेन का पुत्र था, को मंडी का राजा बनाया गया। इसके बाद राजा खड़कसेन के पुत्र राज कुमार नौ निहाल सिख ने सेना को साथ लेकर मंडी व कमलाह गढ़ पर आक्रमण किया, लेकिन वह कमलाह गढ़ पर कब्जा न कर सका। 1840 में नौ निहाल सिंह ने जनरल वेंचुरा जो फ्रांस का रहने वाला था उसके साथ मिलकर कमलाह गढ़ पर आक्रमण किया परंतु वह सफल नहीं हुआ। 5 नवम्बर 1840 ई० को नौ निहाल सिंह की मृत्यु हो गयी और जनरल वेंचुआ अपनी सेना सहित कुल्लू चला गया।

अंत में बड़ी कठिनाई से सिखों ने कमलाह गढ़ पर विजय प्राप्त की। 1841 में शेर सिंह लाहौर के राजा बने और उन्होंने मंडी के राजा बलबीर सेन को आजाद करने का आदेश दे दिया। 1845 में राजा बलबीर सेन ने अंग्रेजो की सहायता से कमलाह

आइये जानते हैं तुंगल घाटी के लोकप्रिय मंदिरों में से एक जनित्री देवी (जालपा माता मंदिर) के बारे में

जनित्री देवी मंदिर कोटली के लोकप्रिय मंदिरों में से एक है। यह बहुत ही सुन्दर मंदिर है और यह मन्दिर जनित्री देवी (जालपा माता) को समर्पित है। यहाँ पर भगवान शिव और हनुमान जी की दर्शनीय मूर्तियां भी हैं। यह मंदिर कोटली में जनित्री धार के शीर्ष पर स्थित है। यह स्थान हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर स्तिथ है और यहाँ लागधार एवं कड़कोह गाँव से लिंक रोड़ द्वारा पहुंचा जा सकता है। यह सड़क राष्ट्रीय राजमार्ग 70 (मंडी-जालंधर) से अच्छी तरह से जुड़ी हुई है। यह मंदिर पर्वत के शीर्ष पर है और यहां से तुंगल घाटी का दृश्य और भी मनोरम, सुंदर एवम् अद्भुत दिखता है। मंडी जिला, कोटली (तुंगल) और आस-पास के गांव के लोगों का इस मंदिर के प्रति गहरी आस्था एवम् विश्वास है। स्थानीय नव विवाहित जोड़े शादी के बाद अपने भविष्य के जीवन की सुखद कामना के लिए देवी जनित्री के आशीर्वाद के लिए यहाँ आते हैं। हर साल इस मंदिर पर एक मेले का आयोजन भी होता है। जनित्री मंदिर के मुख्य द्वार में शिव और हनुमान की दो विशाल मूर्तियाँ हैं। यहाँ से आगे मुख्य मंदिर तक पैदल ही चलकर जाना पड़ता है यह आगे मुख्य मंदिर तक पैदल ही चलकर जाना पड़ता है। यह मंदिर पुराने रीति-रिवाजों और परंपरा को महत्व देता है। यहाँ पर वन विभाग का एक सुंदर विश्राम ग्रह भी है। जनित्री धार से आप कमलाह गढ़ का किला भी देख सकते हैं।

जनित्री देवी मंदिर का इतिहास

इस मंदिर का इतिहास 500 साल से अधिक पुराना है। पौराणिक कहानियों से पता चलता है कि कुमारढा गाँव का एक गरीब व्यक्ति था जो जम्मू क्षेत्र में एक ठेकेदार (वन काटने वाला) के लिए काम

Scanned with CamScanner

जिसमें उसे कई दिन लगेंगे। दैवीय आवाज ने उसे मूर्ति को अपने सामान के साथ बाँधने की सलाह दी और आँखे बंद करके उस स्थान के बारे में सोचने को कहा जहाँ वह पहुँचना चाहता था। तब उसके पास निर्देशों का पालन करने के अलावा कोई और ~~विकल्प~~ विकल्प नहीं था। उसने अपने सामान के साथ मूर्ति को बांध दिया और यह सोचकर अपनी आँखे बंद कर लीं कि वह जनित्री धार पहुंच जाए क्योंकि अब मंदिर का वर्तमान स्थान है, यह देखकर वह आश्चर्यचकित था कि कुछ ही क्षणों के बाद वह उस जगह पर था जहां वह पहुंचना चाहता था। इसी स्थान पर आज माता का मंदिर है।

कैसे पहुंचा जाए जनित्री देवी मंदिर

बस द्वारा ——

(i) NH-70 द्वारा मंडी शहर से कोटली तक – 20 km.
(ii) कोटली से लगधार लिंक रोड द्वारा – 13 km.

Roll NO- Bsc/17/CHEM/021

By Diksha Thakur

Scanned with CamScanner